साहित्योत्सव
Festival of Letters
24 - 29 फ़रवरी 2020

दैनिक समाचार बुलेटिन

शनिवार, 29 फ़रवरी 2020

श्रेष्ठ अनुवाद के लिए देश की भाषायी विविधता जानना ज़रूरी

"अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व" विषयक परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात मराठी कवि एवं अनुवादक चंद्रकांत पाटील ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि अनुवाद केवल शब्दों का अनुवाद नहीं, बल्कि शब्दों के साथ जुड़ी एक पूरी संस्कृति का अनुवाद होता है। केवल सृजनात्मक रचनाओं के अनुवाद को ही हम अनुवाद की श्रेणी में रख सकते हैं और यह काम सबसे ज़्यादा चुनौतीपूर्ण होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो जिस भाषा से हम अनुवाद कर रहे हैं उस भाषा की संस्कृति की जितनी ज़्यादा जानकारी होगी, अनुवाद उतना ही सुंदर हो सकेगा। शरतचंद्र, प्रेमचंद, मंटो से लेकर अमृता प्रीतम तक, जो हमारे देश की साहित्यिक धरोहर हैं, अनुवाद के कारण ही सार्वजनिन हुए हैं। जैसे पृथ्वी पर वही चीज़ें ज़्यादा समय तक जीवित रहती हैं जो जैविक विविधता से परिपूर्ण होती हैं, उसी तरह वही अनुवाद लंबे समय तक जीवित रहेगा जो देश की भाषायी विविधता को अपने में समेटेगा। परिचर्चा का अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि अनुवाद की प्राचीन परंपरा के कारण ही भारत आज एक राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। बहुभाषी देश में अनुवाद एक ऐसा सेतु है जो लोगों को पास लाता है और 'अन्य' के प्रति समझ और सम्मान को बढ़ाता है। उन्होंने अनुवाद के लिए अंग्रेज़ी पर निर्भरता की बजाय भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद पर ज़ोर दिया। के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि अनुवाद के माध्यम से विचार, भाव, संवेदनाएँ और एक क्षेत्र की समस्याओं, परिस्थितियों की जानकारी भी दूसरी भाषा में पहुँचती हैं। स्रोत भाषा के साहिल को अर्थपूर्ण तरीक़े से लक्ष्य भाषा में पहुँचाना अनुवाद का वास्तविक उद्देश्य होता है।

सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पर अवधेश कुमार सिंह के संपादन में प्रकाशित की गई महत्त्वपूर्ण पुस्तक *हिंदी अनुवाद विमर्श* (दो खंड) का विमोचन भी किया गया। अगले सत्र में सुकृता पॉल कुमार की अध्यक्षता में आलोक गुप्त (गुजराती), जानकी प्रसाद शर्मा (उर्दू), प्रवासिनी महाकुड (ओड़िआ), रेखा सेठी (हिंदी) ने अपनी-अपनी भाषाओं में अनुवाद के समय आनेवाली परेशानियों का ज़िक्र किया।

सुकृता पॉल कुमार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि वर्तमान में अनुवादों का चयन बाज़ार के दबाव में हो रहा है, जो कि स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं है। अनुवाद की पूरी प्रक्रिया रस्सी पर संतुलन के समान है जहाँ ज़रा सी भी नज़र चूकने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। आगे उन्होंने कहा कि अनुवाद एक कला है। अनुवाद री-क्रिएशन के रूप में यथार्थ का पुनसृर्जन करता है। किसी क्षेत्र में वास्तविक

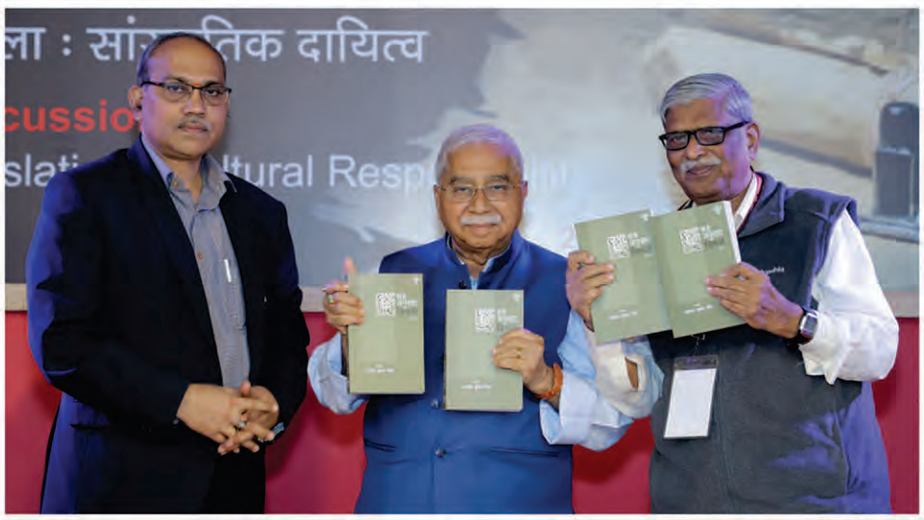

आज के कार्यक्रम

प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी)
साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे

भारत में प्रकाशन की स्थिति (परिचर्चा)
रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 10.00 बजे

नई फ़सल (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन)
रवींद्र भवन परिसर, सायं 10.30 बजे

यथार्थ को परिवेश और भाषा में पहुँचाने का कार्य कितना जटिल है, यह आप सोच कर देखें।

गुजराती अनुवादक आलोक गुप्त ने कहा कि बाज़ार के दबाव के कारण तुरंत अनुवाद करने की प्रक्रिया बढ़ी है जिसके कारण अनुवाद कर्म को बेहद नुक़सान हो रहा है। क्योंकि भाषा संस्कृति की वाहक होती है अतः हमें अनुवाद के सांस्कृतिक दायित्व को भी समझना ज़रूरी है। जानकी प्रसाद शर्मा ने कहा कि अनुवाद के सभी सिद्धांत तभी काम आ पाते हैं जब अनुवादक की सांस्कृतिक समझ और उसका अनुभव व्यापक होता है। रेखा सेठी ने देश की बहुभाषिकता की ताक़त में कमी आने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे अनुवाद की सृजनात्मकता पर दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे। परिचर्चा का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

बिना संवेदना के पत्रकारिता निरर्थक – बल्देव भाई शर्मा

"मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना" विषयक परिचर्चा के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात पत्रकार एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के पूर्व अध्यक्ष बल्देव भाई शर्मा थे। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि बिना संवेदनशीलता के की गई पत्रकारिता मानवता के लिए बेहद हानिकारक है। पत्रकारिता में संवेदना होना इसलिए आवश्यक है कि वर्तमान में मीडिया की पहुँच बहुत व्यापक हो गई और उसका तत्कालिक प्रभाव भी बहुत तेज़ी से सामने आता है। उन्होंने हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के कई उदाहरण देते हुए कहा कि भारत में पत्रकारिता साहित्य से ही परिष्कृत होकर निकली है अतः वह हमेशा संवेदना से पूर्ण रही है। सत्र के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि टी.वी. पत्रकारिता आने के बाद झूठी तस्वीरों का एक ऐसा सिलसिला शुरू हुआ है, जिससे हमें सतर्क रहने की ज़रूरत है। वर्तमान की इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता को 'इमेज ट्रैप' की संज्ञा देते हुए उन्होंने कहा कि इसे रोकने के लिए हमें शीघ्र ही कुछ करना होगा। परिचर्चा के आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि पत्रकारिता आज हमारी जीवन-शैली में शामिल है और इसके समाज पर व्यापक प्रभाव को देखते हुए ही हमने साहित्योत्सव में मीडिया और साहित्य की दशा-दिशा पर परिचर्चा आरंभ की है। संयुक्ता दासगुप्ता की अध्यक्षता में अगले सत्र में अकु श्रीवास्तव, बलदेवराज गुप्ता, डी. उमापति एवं मधु आचार्य ने अपने विचार व्यक्त किए। अकु श्रीवास्तव ने पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि हमारा पूरा नज़रिया उदारवाद आने के बाद बदल गया है। हम केवल निंदा कर रहे हैं लेकिन कोई समाधान नहीं ढूँढ़ रहे हैं। समाचारों को तुरंत 'ब्रेक' की जल्दी में हम तथ्यों की जाँच भलीभाँति नहीं कर रहे हैं और यही विवाद का कारण है। बलदेवराज गुप्ता ने समाचार पत्रों की बिगड़ती भाषा पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने पत्रकारिता-प्रशिक्षण की कमी और वर्तमान में पढ़ाई जा रही पत्रकारिता पर गहरी चिंता व्यक्त की। डी. उमापति ने कन्नड पत्रकारिता में संवेदना के वर्तमान आयामों पर चर्चा की और कहा कि हिंदी में जिस तरह की साहित्यिक परंपरा है वैसी

कन्नड में भी है। मधु आचार्य ने समाज और सत्ता के ढाँचे में आए बदलाव की तरफ इशारा करते हुए कहा कि इस कारण पूरे समाज की संवेदनाएँ नष्ट हुई हैं। इसका प्रभाव हमारी पत्रकारिता पर भी पड़ा है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : दूसरा दिन

कल प्रारंभ हुई ''प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य'' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आज दूसरा दिन था। संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता हरीश त्रिवेदी ने की, जबकि सीमा शर्मा और सचिन केतकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सचिन केतकर ने गुजराती के दो महत्त्वपूर्ण कथाकारों को संदर्भित करते हुए कहा कि ऋतुओं के परिवर्तन और क्षेत्र की वनस्पतियों और जीवों के वर्णन का लेखकों महत्त्वपूर्ण एवं प्रतीकात्मक है। कहानियों में विशिष्ट क्षेत्रीय और पर्यावरणीय स्थान केवल कथाओं में 'व्यवस्था', 'पृष्ठभूमि' या 'लोकेल' की भूमिका ही नहीं निभाते, बल्कि कथा में लोगों की नियति को आकार देने वाले आवश्यक चरित्र बन जाते हैं और केंद्रीय प्रतीक जो एक ही समय में प्राचीन एवं समकालीन है वह मनुष्य की आंतरिक और बाहरी दुनिया को दर्शाता है।

सीमा शर्मा ने कहा कि प्रकृति पर लिखित साहित्य की भारतीय संस्कृति में गहरी जड़ें हैं। भारतीय लोककथाओं, मिथकों और किंवदंतियों ने प्रकृति के साथ मनुष्य के सामंजस्यपूर्ण और सहजीवी संबंधों को दर्शाया है। यद्यपि पिछली सदी की अंधाधुंध विकासात्मक गतिविधियों के कारण बड़े पैमाने पर वनों का नुकसान हुआ है तथा जल संसाधनों, मिट्टी और वायु प्रदूषण बढ़ा है। इन मुद्दों ने विश्वभर के लेखकों और पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है।

पंचम सत्र 'कवि-कल्पना में प्रकृति' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता इंद्रनाथ चौधुरी ने की तथा इस सत्र में पी. मणिक्यांबा 'मणि', बोधिसत्व एवं रख़्शंदा जलील ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

रख़्शंदा जलील ने उर्दू और फ़ारसी में प्रकृति की व्यापकता का विवरण प्रस्तुत किया। प्रकृति का सामान्य रूप से विविधतापूर्ण वर्णन, वसंत, ऋतुओं का बदलना, बादलों, हवा, विशेष रूप से सुबह और गोधूलि उनके प्रिय विषय रहे हैं। यह भी कहा जाना चाहिए कि इन विषयों में से अधिकांश के लिए एक निश्चित बयानबाज़ी की गुणवत्ता थी तथा इन्हें अधिक सुंदर तथा शास्त्रीय परंपरा से युक्त करने हेतु इनके कॉस्मेटिक सौंदर्य को विवरणों द्वारा बढ़ाया गया।

मिनी प्रसाद ने कहा कि नारीवाद एक ऐसे समुदाय को आवाज़ देता है जिसे इतिहास और संस्कृति में हाशिये पर रखा गया है। 1960 के दौरान नारीवाद आगे बढ़ गया तथा कुछ अन्य विचारधाराओं के साथ मिलकर उसका विकास हुआ। इस प्रकार से नारीवाद और पर्यावरणवाद के विलय को इको-फेमिनिज़्म के रूप में जाना जाता है।

यह समझ कि मानव के अस्तित्व को कई संकटों का सामना करना पड़ रहा है, ने प्रकृति माँ के संरक्षण के लिए पर्यावरणवाद और विचारधाराओं कों जन्म दिया। जबकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और औद्योगीकरण द्वारा तेजी से प्रकृति का शोषण किया जा रहा था, तब इस बात को महसूस किया गया कि इस ग्रह पर जीवन को ख़तरा है और तब पर्यावरणवाद जैसी बढ़ती विचारधाराओं को संचालित किया गया तथा दिनों दिन उन्हें और अधिक गति प्रदान की गई। इस ग्रह को हमें अगली पीढ़ी को सौंपने से पूर्व, सह-अस्तित्व और सहानुभूति के एक मात्र तरीक़े पर चल कर उसे पहले समझना होगा।

पी. मणिक्यांबा 'मणि' ने अपने आलेख में बताया कि मानवीकरण, मानवीय चेष्टाओं का आरोप, मानवीय भावनाओं के साथ प्रकृति के दृश्यों के रूपकों के आधार पर तेलुगु साहित्य में अनेक सुंदर, कोमल और गतिशील बिंबों की सृष्टि हुई है। इस प्रकार कविताओं की कल्पना में प्रकृति पर विचार हुआ।

संगोष्ठी का षष्ठ सत्र 'स्त्रीवाद और दलित कल्पना' पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता मालाश्री लाल ने की और मिनि प्रसाद, मंजू सरकार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। मंजू सरकार ने महाश्वेता देवी के उपन्यास *जंगल के दावेदार* : दलित कथा पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि उपन्यास का अंत यह चित्रित करता है कि प्रकृति, दलित भावना और नारीवाद एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

सप्तम सत्र का विषय था—'आधुनिक भारतीय कथा साहित्य में प्रकृति और क्षेत्र'। इसकी अध्यक्षता उदय नारायण सिंह ने की। इस सत्र में पी.पी. रवींद्रन, सा. कंदासामी, राणा नायर एवं यशोधारा मिश्रा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उदय नारायण सिंह ने पश्चिम बंगाल की कथाओं के संदर्भ में क्षेत्रवाद पर अपने विचार व्यक्त किए।

दास्तान-ए कर्ण अज़ महाभारत की प्रस्तुति

महमूद फ़ारूक़ी द्वारा लिखित 'दास्तान-ए कर्ण अज़ महाभारत' प्रस्तुति में महाभारत में कर्ण के किरदार को मंच पर वाचिक रूप में प्रस्तुत किया गया। यह इसलिए अनूठा रहा क्योंकि इसे उर्दू दास्तानगोई के ख़ास लब-ओ लहजे में पेश किया गया। यह प्रस्तुति कई अंतरमहाद्वीपीय पाठों की विस्तृत विविधता पर आधारित रही जो शायद ही कभी एक साथ प्रस्तुत किए गए हैं। यह दास्तान मूल संस्कृत महाभारत, जो फ़ैज़ी और अब्दुर्रहीम ख़ान-ए ख़ाना की देखरेख में सम्राट अकबर द्वारा कराए गए फ़ारसी अनुवाद 'रम्ज़नामा' के नाम से मशहूर, को आधार बना कर प्रस्तुत की गई; 200 साल पहले इसका उर्दू अनुवाद तोता राम शयान और फिर पाकिस्तानी लेखक कामरान असलम द्वारा किया गया था; पाकिस्तान में 'गीता' का अनुवाद ख़लीफ़ा अब्दुल हकीम और भारत में इसका फिर से अनुवाद उर्दू शायर अनवर जलालपुरी ने किया था; हिंदी कवि रामधारी सिंह दिनकर की कर्ण पर केंद्रित प्रसिद्ध कृति 'रश्मिरथी', मराठी लेखक शिवाजी सावंत का कर्ण पर आधारित महान उपन्यास 'मृत्युंजय', टैगोर की कुंती और कर्ण पर लिखी कविता, और इरावती कर्वे की महाभारत पर केंद्रित बहुप्रशंसित रचना को इस दास्तान में समाहित किया गया। इसके अलावा यह प्रस्तुति 'गीता' और 'क़ुरान' में मौजूद समरूप उद्धरणों को भी अभिव्यक्त की। इस प्रस्तुति की मुख्य भाषा उर्दू रही लेकिन संस्कृत, हिंदी, फ़ारसी और अरबी का भी इसमें पर्याप्त उपयोग किया गया। महमूद फ़ारूक़ी की इस प्रस्तुति को सभी दर्शकों ने बेहद सराहा और तालियों द्वारा उनका अभिनंदन किया।

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in